नागरवाद

नगरीकरण के उत्पाद के रूप में जिस समाज का निर्माण होता है साधारण शब्दों में उसे ही नागरवाद कहा जाता है। वास्तव में जब ग्रामीण जनसंख्या नगरों में रहने लगती है तो एक विशेष प्रकार की जीवनशैली का विकास होता है और कुछ समाजशास्त्रियों ने जिनमें वर्थ, एंडरसन, मौरिस आदि हैं, ने इस जीवनशैली को ही नागरवाद कहा है। कुछ समाजशास्त्रियों ने नगरीकरण एवं नागरवाद दोनों को साथ-साथ परिभाषित किया है, इनमें सबसे पहला नाम क्विन तथा कारपेंटर का है। इन्होंने नगरीकरण एवं नागरवाद में अंतर करते हुए लिखा है।'' नागरवाद का प्रयोग हम नगर-विकास की प्रघटना को पहचानने के लिये करते हैं। नगरीकरण का प्रयोग एक विशिष्ट जीवनशैली, जो अद्‌भुत रूप से नगर निवास से जुड़ी है, को पहचानने के लिये करते हैं। इनके अनुसार, नगरीकरण एक जीवनशैली है जबकि नागरवाद एक प्रक्रिया है।

लुई वर्थ ने क्विन एवं कारपेन्टर की उपरोक्त परिभाषा को बिल्कुल पटलते हुए कहा है ''नगरीकरण को एक प्रक्रिया के रूप में देखें और नागरवाद को स्थिति के या परिस्थितियों के समुच्चय के रूप में। इस प्रकार नगरीकरण गतिशील अवधारणा है जबकि नागरवाद स्थिर।'' यहाँ यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये कि उपरोक्त दोनों परिभाषाओं में विरोधाभास होते हुए भी वर्थ की परिभाषा को ही स्वीकार किया गया है।

रोबर्ट वियरस्टेड ने अपनी रचना 'सोशियल सिस्टम' में लिखा है ''नगरीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें ग्रामीण क्षेत्र, नगरीय क्षेत्र में परिवर्तित हो जाते हैं और नागरवाद एक स्थिति है जो कि इस प्रक्रिया का परिणाम है।''

वियरस्टेड मानते हैं कि नागरवाद सांख्यिकीय दृष्टि से विचारणीय अवधारणा अधिक है क्योंकि केवल किसी स्थान पर जनसंख्या के घनत्व के बढ़ जाने मात्र से उसमें नागरवाद की विशेषताएँ आ जायें यह आवश्यक नहीं हैं।

नागरवाद पर सबसे पहले व्यवस्थित विचार लुइवर्थ द्वारा लिखित लेख ''अरबेनिज्म एज ए वे ऑफ लाइफ'' में जो 'अमेरिकन जर्नल आफ सोशियोलॉजी' में 1939 में प्रकाशित हुआ था, देखने को मिलते हैं। लुइवर्थ ने नागरवाद को जीवन के एक विशिष्ट तरीके के रूप में माना है। लुइवर्थ ने अपने प्रारम्भिक लेख में तीन अवधारणाओं आकार, घनत्व और विषमता को नगर के आधारभूत तत्त्व के विश्लेषण का आधार माना है। इन आधारभूत तत्त्वों को एक-दूसरे से अंतः सम्बन्धित करते हुए उन्होंने कुछ प्राक्क्थनों की रचना की और नगर को परिभाषित करते हुए कहा कि ''यह सामाजिक विषमता वाले व्यक्तियों की साक्षेपरूप में घनी, बड़ी और स्थाई बसावट है।'' लुइवर्थ ने नागरवाद को ''जीवन की एक विधि'' बतलाया है। वर्थ के नागरवाद संबंधी 12 प्राक्कथन संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार से हैं -

Scanned with CamScanner

1. (अ) नगर की वृद्धि एवं विविधता और नगरवासियों के मध्य कमजोर सम्बन्धों का होना आपसी सहसम्बन्ध है। ऐसा इसलिये है क्योंकि नगरवासी सापेक्षिक रूप से सामान्य परम्परा के अन्दर कम समय से रहे हैं।

(ब) इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि सामान्य परम्पराओं के स्थान पर सामाजिक नियंत्रण हेतु औपचारिक साधन हों।

(स) विभिन्न उपसमूहों द्वारा विविधतामूलक जनसंख्या के सामाजिक नियंत्रण की समस्या का समाधान, अर्थात् जैसे- नगर की वृद्धि के साथ विविधतापूर्ण समाज की रचना होती है, व्यक्तियों के आपसी संबंध कमजोर, सतही और औपचारिक हो जाते हैं। अब सामाजिक नियंत्रण के परम्परागत साधनों जिनमें परम्परायें, मूल्य, धर्म आदि हैं का स्थान औपचारिक समूह जैसे न्यायालय, पुलिस आदि ले लेते हैं।

2. (अ) जैसे-जैसे कस्बे या नगर में वृद्धि होती है, यह संभव नहीं रह जाता कि कोई निवासी अन्य सभी को व्यक्तिगत रूप से पहचाने।

(ब) नगर में एक व्यक्ति के अधिकांश संपर्क अवैयक्तिक, सतही, अल्प अवधि वाले एक एकपक्षीय हो जाते हैं।

(स) नगरवासियों के लिये सामाजिक संबंध, लक्ष्यों के स्थान पर साधन बन जाते हैं।

3. (अ) उच्च स्तर तक विकसित श्रम-विभाजन और सामाजिक संबंधों को लक्ष्यों की जगह साधन के रूप में उपयोग में लाना परस्पर संबंधित हो जाता है।

(ब) श्रम-विभाजन के विकास के साथ ही छोटे पारिवारिक व्यवसाय पर बड़ी कम्पनियों का प्रभुत्व हो जाता है।

(स) सामाजिक एकीकरण हेतु व्यावसायिक समूहों के लिये नैतिक संहिताओं और शिष्टाचारों का होना आवश्यक हो जाता है, अर्थात् उच्चस्तर का श्रम-विभाजन और समाजिक-संबंध लक्ष्यों की जगह साधन बन जाते हैं और पारिवारिक व्यवसाय के स्थान पर कम्पनियाँ स्थापित हो जाती हैं। इन सब में एकीकरण बनाये रखने के लिये कानूनों का विकास होने लगता है।

4. (अ) बाजार के विकास के साथ ही श्रम-विभाजन का और अधिक विस्तार हो जाता है।

(ब) अति-विशेषीकरण एवं अन्तः निर्भरता में सह-संबंध के साथ ही नगर में अस्थिर सम-सन्तुलन स्थापित हो जाता है।

श्रम-विभाजन के साथ विशेषीकरण जुड़ा हुआ है। जब श्रम-विभाजन का अतिविस्तार हो जाता है तो विशेषीकरण भी अपनी चरम अवस्था में पहुंच जाता है। यह इमाइल दुर्खिम की सावयवी एकता जैसी स्थिति है जिसमें एक-दूसरे पर अन्तःनिर्भरता बढ़ जाती है।

Scanned with CamScanner

5. (अ) जैसे ही नगर का विकास हो जाता है सभी नगरवासियों को एक स्थान पर एकत्रित करना संभव नहीं रह जाता।

(ब) अन्ततः सूचनाएँ पहुंचाने, निर्णय करने एवं जनमत बनाने में अप्रत्यक्ष संचार साधनों पर निर्भरता बढ़ जाती है।

अर्थात् जब जनसंख्या अधिक हो जाती है तो बस्ती के सभी व्यक्ति एक स्थान पर एकत्रित होकर विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श नहीं कर सकते हैं इसलिये संचार के अप्रत्यक्ष साधन जैसे अखबार, रेडियो आदि की भूमिका बढ़ जाती है।

6. (अ) एक क्षेत्र विशेष में जनसंख्या घनत्व में वृद्धि होने के साथ ही विभेदीकरण और विशेषीकरण में भी वृद्धि होने लगती है।

(ब) एक क्षेत्र में जनसंख्या में वृद्धि होने पर यह आवश्यक हो जाता है कि अत्यधिक विभेदीकरण एवं विशेषीकरण हो। यह प्राक्कथन डार्विन की योग्यतम की विजय के समरूप है।

अर्थात् जब एक स्थान पर बहुत से व्यक्ति रहने लगेंगे तो संघर्ष और प्रतिस्पर्धा से बचने के लिये वे अलग-अलग क्षेत्रों एवं अलग-अलग व्यवसायों को अपनायेंगे और अपने व्यवसायों से अधिक से अधिक दक्ष (विशेषीकृत) होना चाहेंगे नहीं तो उनका अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा।

7. (अ) नगर में भौतिक संपर्क बहुत करीब होते हैं जबकि सामाजिक संपर्क तुलनात्मक रूप से सतही होते हैं।

(ब) अतः व्यक्तियों को दिखाई देने वाले प्रतीकों जैसे, वेशभूषा, भौतिक द्रव्यजात के आधार पर श्रेणीबद्ध कर, प्रत्युत्तर दिया जाता है।

अर्थात् नगर के व्यक्तियों में भौतिक दूरियाँ बहुत कम होती हैं लेकिन सामाजिक संपर्क उतने ही सतही, औपचारिक और दिखावटी होते हैं। व्यक्ति की पहचान उसके पहनावे के आधार पर होती है और उसी के अनुरूप उसके साथ व्यवहार-प्रतिमान तय होते हैं।

8. (अ) भूमि के उपयोग के नगरीय प्रतिमान उसे दुर्लभ एवं प्रतिस्पर्धा की वस्तु बना देते हैं।

(ब) आवासीय उपभोग के लिये वांछनीय क्षेत्र का चयन अनेक सामाजिक कारकों द्वारा प्रभावित होता है जैसे जनसंख्या का प्रजातीय एवं सजातीय संगठन, प्रदूषण आदि।

(स) एकसी पृष्ठभूमि के व्यक्ति एक ही क्षेत्र में रहने के लिये बाध्य होते हैं।

अर्थात् नगरों में आवास की भूमि सहज रूप में उपलब्ध नहीं हो पाती। भूमि की कीमतें बढ़ जाती है। व्यक्ति उन क्षेत्रों में रहना चाहते हैं, जहाँ उनके जैसे लोग रहते हैं। आवासीय क्षेत्र का चुनाव करते हुए व्यक्ति यह देखते हैं कि उस क्षेत्र में रहने वाले लोग किस जाति, धर्म या प्रजाति के हैं, प्रदूषण का स्तर कैसा है। उदाहरण के लिये हिन्दु, हिन्दुओं की

Scanned with CamScanner

बस्ती में बसना चाहते हैं जबकि मुसलमान मुस्लिम बस्तियों में। अमीर अमीरों की बस्तियों में तो गरीब कच्ची बस्तियों में।

9. (अ) सह-कर्मियों एवं सहनिवासियों के मध्य निकटता, भावनात्मकता एवं संवेदनात्मकता का अभाव तथा सहयोग के स्तर के स्थान पर प्रतिस्पर्धा एवं आपसी शोषण बढ़ जाता है।

(ब) उच्च जनसंख्या घनत्व में निरन्तर भौतिक सम्पर्क एवं जीवन की तेज रफ्तार अन्तर्निहित है।

(स) निरंतर संपर्क एवं कमजोर भावनात्मक लगाव का सम्मिश्रण तभी बना रह सकता है जब अनुशासित तथा अर्थपूर्ण दिनचर्या हो।

10. (अ) विभिन्न भूमिका वाले व्यक्तियों एवं व्यक्तित्वों के साथ अंत: क्रियाएँ असाधारण वर्गभेद को समाप्त कर देती है।

(ब) परिणामत: वर्ग संरचना कम स्पष्ट हो जाती है।

11. (अ) नगर के निवासियों के विभिन्न समूह एवं समूह के प्रति निष्ठाओं में अक्सर संघर्ष होता है।

(ब) परिणामत: नगर के निवासी भौगोलिक एवं सामाजिक रूप से अधिक गतिशील होते हैं।

(स) अन्तत: नगरवासी अधिक कृत्रिम एवं दिखावटी होते हैं।

12. (अ) एक पक्षीय संबंधों पर जोर एवं श्रम-विभाजन का योग समतलन प्रभाव डालता है।

(ब) यह समतलन संबंधी प्रभाव ''आर्थिक या धन संबंधी अन्तर्बंधन'' के विकास में भी देखा जा सकता है।

(स) यह मानकीकरण समाज में सामान्य संस्कृति का आधार बनता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्थ ने नगरीयता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है।

आर. एन. मोरिस ने वर्थ के इस प्राक्कथनात्मक सिद्धान्त के निर्माण के मुख्य उद्देश्यों तथा योगदान को स्पष्ट किया है। प्रथमत: वर्थ ने नागरवाद को जीवन विधि नहीं माना और इसके प्रभाव इसकी प्रशासनिक सीमाओं से परे हैं।

द्वितीय, वर्थ ने यह भी महसूस किया कि नगरों का आकार नगरीकरण का एक कमजोर पैमाना है। एक छोटे कस्बे के निवासी अधिक नगरीकृत हो सकते हैं बशर्ते कि वे कितने संवेदनशील हैं।

तृतीय, वर्थ ने यह भी स्पष्ट किया है कि उनकी नगर की परिभाषा नगरीय विशेषताओं पर पूर्ण विवरण प्रस्तुत नहीं करती। इनका उद्देश्य नगर के मुख्य तत्त्वों को ढूंढ़ना था।

चतुर्थ, वर्थ ने यह भी स्पष्ट किया है कि हमें जीवन विधि के नगरीय स्वरूप को, विशेषकर आधुनिक पूँजीवादी औद्योगिक नगरों के संदर्भ में, ऐतिहासिक स्थितियों के साथ मिलाकर नहीं देखना चाहिये।

Scanned with CamScanner

पाँचवाँ, वर्थ के इस लेख का उद्देश्य नगरों के प्रकारों को तय करना था। अन्तत: उसने प्राक्कथनों को कारण एवं प्रभावों के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

नागरवाद की विशेषताएँ

एन. एण्डरसन ने नागरवाद को जीवन का एक तरीका मानते हुए इसके निम्न तत्त्व बतलायें हैं :-

1. श्रम-विभाजन का वृहतरूप जिसमें कार्य-विभाजन में उच्च विशेषीकरण सुदूर क्षेत्र में वितरण के लिये सेवाओं और वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन।
2. यंत्रों और यांत्रिक शक्ति के प्रयोग की कार्य के स्थल और रहने के स्थान पर प्रतिबद्धता।
3. व्यक्ति का परम्परागत नियंत्रण एवं स्वामिभक्ति से विमुखता। सम्पर्कों में क्षणिकता एवं द्वितीयक समूह पर निर्भरता में वृद्धि।
4. दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में उच्च गतिशीलता जिसमें आवास-परिवर्तन, काम और व्यवसाय में परिवर्तन एवं कभी-कभार सामाजिक स्तर में भी परिवर्तन होता है।
5. तकनीकी प्रगति और संरचनात्मक नवीनीकरण से नगरीय वातावरण के मानव-निर्मित तत्त्वों में लगातार परिवर्तन।
6. व्यक्ति और समूह दोनो यांत्रिक जीवन के अधीन व्यक्ति की सभी गतिविधियों एवं मुलाकातों पर घड़ी का नियंत्रण।
7. परिचय और संबंधों मे क्षणिकता एवं भीड़ में अनजानेपन का संबंध।
8. परिवर्तनों के प्रति आशावादी दृष्टिकोण एवं अनुकूलन में वृद्धि।
9. क्रियाओं, सम्पर्कों, उपस्थितियों, वकालातों के सत्यापन के क्षेत्र में दस्तावेजों की बढ़ती हुई प्रवृत्ति।

इनमें से अधिकांश तत्त्व औद्योगिक देशों के नगरीय जीवन में देखने को मिलते हैं। ये कुछ तत्त्व हैं, इनके अलावा और तत्त्व भी हो सकते हैं। जैसे :-

(अ) सामाजिक नियंत्रण में द्वितीयक संगठनों की भूमिका का होना।

(ब) आर्थिक सुरक्षा की सामूहिक व्यवस्था।

एण्डरसन ने इन्हीं बिन्दुओं का विस्तार से वर्णन भी किया है।

Scanned with CamScanner